


उरे तथा खल वाड के विनि होने ल मोंके व
रिनाई से पदास्थिति बनाने रखते हे कन्तरिक कल्याण
निवेद्याता से पाब-ड फटमावे।

उपनिषद् शिष्यवत् की बहल पर गगन विद्या।
पराबली पर उपलब्ध दत्तार्थको का अवलोकन विद्या गण।
उपलब्ध में प्रस्तुत स्वार्थको अनुपात वाडगुण करानी
कहेत जायेदारी से उचित होती हो तथा गपरी
नम्र से चरित मार्ग उपनिषद् व उपनिषद् की उचित
करानी हीन उक्त होत है। जो उपनिषद् का भावगण
का उक्त मार्ग ही उचित उपलब्ध दत्तार्थको मापत
उपनिषद् के पर से प्राप्त जाता है। सुविद्या का संतुलन
व अज्ञानी सति के विचारण हेतु कन्तरिक कल्याण
निवेद्याता पाती विद्या जाता उचित मानता है।

अतः माँजा गेलिया पटवाल हेतु गुणगुण नद्वी
सांचौर के वरिष्ठ कला संख्या 413 संख्या 3:73
हेतु शक्ति में उपनिषद् होता 22 से परिचय कन्तरिक
कल्याण निवेद्याता खल वाड के विचारण ल पाब-ड विद्या
जाता है कि उपनिषद् के भावगण में मोई बाधा उत्पन्न
नही करे तथा न ही किसी कल्प ले करावे। पराबली
मैपलशुभात् होत नम्रवत् से कल से पाब-ड हीन


सहायक कलेक्टर, सांचौर
(उपखण्ड अधिकारी, सांचौर)